E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 6 | June 2025

राजस्थान में बढ़ता जल संकट: एक गंभीर समस्या

महेंद्र कुमार मिठारवाल
सहायक आचार्य, भूगोल विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री कन्या महाविधालय,श्रीमाधोपुर,सीकर,(राजस्थान) पिनकोड 332715

1. भूमिका

राजस्थान, जो भारत का सबसे बड़ा राज्य है, भौगोलिक दृष्टि से एक अत्यंत शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। यहाँ की जलवायु विषम है, वर्षा की मात्रा अत्यंत कम और अनियमित है, जिससे जल की उपलब्धता निरंतर संकटग्रस्त बनी रहती है। पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण तथा कृषि की पारंपरिक पद्धतियों में हुए परिवर्तनों ने जल संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाला है। इस परिप्रेक्ष्य में राजस्थान में जल संकट एक गंभीर और बहुआयामी समस्या के रूप में उभरकर सामने आया है। राजस्थान का अधिकांश भाग थार मरुस्थल से आच्छादित है, जहाँ जल के प्राकृतिक स्रोत अत्यंत सीमित हैं। परंपरागत जल-संरक्षण प्रणालियाँ जैसे बावड़ियाँ, जोहड़, टांके, आदि कभी यहाँ के जल प्रबंधन की रीढ़ थीं, किंतु आधुनिकता की दौड़ में ये लगभग समाप्तप्राय हो गई हैं। वहीं दूसरी ओर भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन, वर्षा जल का अपर्याप्त संचयन, और नदियों पर निर्भरता ने संकट को और गहरा किया है। आज प्रदेश के कई जिले 'डार्क ज़ोन' घोषित हो चुके हैं जहाँ भूजल स्तर खतरे के निशान से नीचे चला गया है। यह संकट केवल जल की मात्रा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। फ्लोराइड, नाइट्रेट, और भारी धातुओं की उपस्थिति ने ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल को असुरक्षित बना दिया है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ रही हैं। जल संकट का असर कृषि पर भी प्रत्यक्ष रूप से पड़ रहा है, जिससे किसान आत्मनिर्भरता खो रहे हैं और पलायन की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

इस शोध पत्र में राजस्थान में जल संकट के प्रमुख कारणों, इसके सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय प्रभावों तथा वर्तमान नीतियों की समीक्षा के साथ-साथ समाधान के संभावित उपायों पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा। उद्देश्य यह है कि जल प्रबंधन की स्थायी और पारंपरिक तकनीकों के समावेश द्वारा एक दीर्घकालिक समाधान की दिशा में ठोस सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें। जल संकट अब केवल प्राकृतिक समस्या नहीं रह गया है, यह मानवजनित हस्तक्षेपों का प्रतिफल भी है, अतः इसके समाधान हेतु सामाजिक चेतना, प्रशासनिक प्रतिबद्धता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

राजस्थान, जो भारत का सबसे बड़ा राज्य है, भौगोलिक दृष्टि से विशाल रेगिस्तानी प्रदेश के रूप में जाना जाता है। यहाँ का अधिकांश क्षेत्र अर्ध-शुष्क या शुष्क है, जहाँ वर्षा की मात्रा अत्यंत सीमित होती है। जल, जो जीवन का मूलभूत तत्व है, आज इस प्रदेश में तीव्र संकट की स्थिति में पहुँच चुका है। जल संकट केवल एक प्राकृतिक समस्या नहीं रह गई है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विमर्श का केंद्रीय विषय बन गया है।

जनसंख्या वृद्धि, तीव्र होते शहरीकरण, भूमिगत जल के अत्यधिक दोहन और जल संरक्षण की परंपरागत प्रणालियों की उपेक्षा ने इस संकट को और गंभीर बना दिया है। यदि यह स्थिति यूँ ही बनी रही, तो आने वाले वर्षों में राजस्थान को विकराल जल संकट का सामना करना पड़ सकता है, जिससे जीवन का हर पक्ष प्रभावित होगा।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 6 | June 2025

इस शोध लेख के माध्यम से हम राजस्थान में जल संकट के कारणों, उसके प्रभावों, अब तक किए गए प्रयासों और समाधान की दिशा में ठोस सुझावों का विश्लेषण करेंगे, ताकि नीति निर्माण और जनजागरूकता में योगदान दिया जा सके।

2. राजस्थान में जल संकट की पृष्ठभूमि

राजस्थान भारत का एक विशाल और भौगोलिक रूप से विविधता से युक्त राज्य है, जो मुख्यतः शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु के अंतर्गत आता है। राज्य का अधिकांश भाग थार मरुस्थल से आच्छादित है, जहाँ प्राकृतिक जल संसाधन सीमित हैं और वर्षा की मात्रा औसतन 100 से 500 मिमी के बीच ही होती है। जल की यह अल्प उपलब्धता राज्य की सामाजिक, आर्थिक और कृषि संरचना को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। ऐसे में राजस्थान में जल संकट का इतिहास सदियों पुराना रहा है, किंतु वर्तमान में यह संकट और भी गहराता जा रहा है।

पारंपरिक रूप से राजस्थान में जल की कमी से निपटने के लिए स्थानीय समुदायों ने अनोखी जल संचयन प्रणालियाँ विकसित की थीं, जैसे टांके, जोहड़, बावड़ियाँ, कुंड, नाड़ी, तालाब आदि। इन संरचनाओं ने सदियों तक जल आपूर्ति को संतुलित बनाए रखा। सामूहिक भागीदारी और सामाजिक अनुशासन के कारण ये प्रणाली प्रभावी रूप से कार्य करती रहीं। किंतु बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से आधुनिक विकास मॉडल, भूजल पंपों का अंधाधुंध उपयोग, शहरीकरण और जनसंख्या वृद्धि ने इन पारंपरिक प्रणालियों को अप्रासंगिक बना दिया। परिणामस्वरूप पारंपरिक जल स्रोत उपेक्षित हो गए और भूजल पर अत्यधिक निर्भरता बढ़ गई।

1980 के दशक के बाद से राजस्थान के कई जिलों में भूमिगत जल स्तर में तीव्र गिरावट दर्ज की गई। वर्तमान में राज्य के लगभग 249 ब्लॉक में से 200 से अधिक 'डार्क ज़ोन' घोषित किए जा चुके हैं, जहाँ भूजल स्तर अत्यधिक नीचे चला गया है और उसका पुनर्भरण संभव नहीं हो पा रहा है। इसके अतिरिक्त राजस्थान की जलवायु में लगातार हो रहे परिवर्तन, जैसे मानसून का अनियमित होना, लम्बे सूखा काल, और तापमान में वृद्धि, इस संकट को और भी विकट बना रहे हैं।

जल संकट की यह पृष्ठभूमि केवल प्राकृतिक कारणों से नहीं, बल्कि सामाजिक और नीतिगत चूक से भी उत्पन्न हुई है। राज्य में जल नीति का अभाव, जल उपयोग में असमानता, सिंचाई के लिए जल का अपव्यय और ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता की कमी ने इस स्थिति को और जटिल बना दिया है। अधिकांश जल योजनाएँ शहरी केंद्रों पर केंद्रित रही हैं, जिससे ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में जल संकट और अधिक गंभीर हो गया है।

राजस्थान में जल संकट अब केवल पेयजल तक सीमित नहीं है, यह कृषि उत्पादन, पशुपालन, ग्रामीण रोजगार, पलायन, और स्वास्थ्य जैसी अनेक समस्याओं का कारण बनता जा रहा है। जल की कमी के कारण सूखा, कुपोषण, और जलजनित बीमारियाँ बढ़ रही हैं। इस पृष्ठभूमि को समझना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह हमें न केवल समस्या की गहराई और विस्तार को बताती है, बल्कि यह भी स्पष्ट करती है कि समाधान केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक स्तर पर भी खोजे जाने चाहिए। जल संकट का समाधान व्यापक दृष्टिकोण, जनसहभागिता और पारंपरिक ज्ञान के पुनः उपयोग में निहित है।

3. जल संकट के प्रमुख कारण

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 6 | June 2025

राजस्थान में जल संकट का मुख्य कारण प्राकृतिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता और मानवजनित हस्तक्षेपों का असंतुलित स्वरूप है। राज्य की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, और सामाजिक-आर्थिक संरचना जल संकट को उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जल संकट को केवल एक पर्यावरणीय समस्या मानना गलत होगा; यह समस्या बहुआयामी है और इसके कारण प्राकृतिक, सामाजिक, तकनीकी एवं नीतिगत स्तर पर गहराई से जुड़े हुए हैं।

- **अत्यल्प और अनियमित वर्षा:-** राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा मात्र 100 से 500 मिमी के बीच होती है, जो देश के अन्य राज्यों की तुलना में अत्यंत कम है। इसके साथ ही मानसून की अनियमितता एवं सूखे की आवृत्ति ने जल संकट को स्थायी बना दिया है। राज्य के कई जिलों में लगातार सूखा पड़ना आम बात हो गई है, जिससे नदियाँ, तालाब, और अन्य जलस्रोत सूख जाते हैं और भूजल स्तर में तीव्र गिरावट आती है।

- **भूजल का अत्यधिक दोहन:-** कृषि, पेयजल और औद्योगिक कार्यों के लिए भूजल पर अत्यधिक निर्भरता ने राजस्थान में जल संकट को गंभीर बना दिया है। आधुनिक बोरवेल और ट्यूबवेल तकनीक ने भूजल को आसानी से उपलब्ध करा दिया, किंतु इसके अनियंत्रित दोहन ने पुनर्भरण की गति को पीछे छोड़ दिया। परिणामस्वरूप कई क्षेत्रों में भूजल स्तर 400 से 600 फीट तक नीचे चला गया है और राज्य के अधिकांश ब्लॉक 'डार्क ज़ोन' घोषित हो चुके हैं।

- **परंपरागत जल संरचनाओं की उपेक्षा:-** राजस्थान की ऐतिहासिक जल-संरक्षण प्रणाली जैसे टांके, जोहड़, बावड़ी, कुंड, और नाड़ी सदियों तक जल संतुलन बनाए रखने में सहायक रहे, किंतु आधुनिकता की दौड़ में इन्हें उपेक्षित कर दिया गया। शहरीकरण और कंक्रीट निर्माण ने जल-संचयन के प्राकृतिक रास्तों को अवरुद्ध कर दिया, जिससे वर्षा जल व्यर्थ बहने लगा।

- **असंतुलित कृषि नीति एवं जल का अपव्यय:-** राज्य के कई भागों में ऐसी फसलें बोई जाती हैं जिन्हें अधिक पानी की आवश्यकता होती है, जैसे गन्ना और चावल, जबकि यहाँ की जलवायु इसके लिए उपयुक्त नहीं है। इसके अतिरिक्त परंपरागत सिंचाई विधियाँ जैसे बाढ़ सिंचाई, जल का अपव्यय करती हैं। जल उपयोग के प्रति किसानों और आमजन में जागरूकता की कमी इस समस्या को और बढ़ा देती है।

- **जनसंख्या वृद्धि और शहरी विस्तार:-** निरंतर बढ़ती आबादी के कारण जल की मांग अत्यधिक बढ़ गई है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में। वहीं नगरों की जल आपूर्ति हेतु ग्रामीण क्षेत्रों के जलस्रोतों का दोहन होने लगा है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी जल संकट उत्पन्न हो गया है।

अंत में, जल संकट को बढ़ाने में नीतिगत असफलता की भी भूमिका है। जल नीति का अभाव, योजनाओं का कमजोर क्रियान्वयन, और विभागीय समन्वय की कमी ने जल प्रबंधन को अव्यवस्थित कर दिया है। राजस्थान में जल संकट के ये सभी कारण आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं, जिनका समाधान केवल तकनीकी नहीं बल्कि सामाजिक और प्रशासनिक पहल से ही संभव है।

4. जल संकट के प्रभाव

राजस्थान में जल संकट का प्रभाव बहुआयामी है, जो राज्य की सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संरचना पर व्यापक असर डालता है। जल की कमी केवल पेयजल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कृषि उत्पादन,

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 6 | June 2025

पशुपालन, ग्रामीण आजीविका, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी अनेक महत्वपूर्ण गतिविधियों को प्रभावित करती है। जल संकट का प्रभाव शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न रूपों में देखा जा सकता है।

सबसे प्रत्यक्ष और गंभीर प्रभाव पेयजल की उपलब्धता पर पड़ता है। राज्य के कई जिलों, विशेषकर जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, नागौर और जोधपुर में लोगों को मीलों दूर से पानी लाना पड़ता है। महिलाओं और बच्चों पर इसका विशेष बोझ पड़ता है, क्योंकि अधिकांशतः जल लाने की जिम्मेदारी उन्हीं पर होती है। इससे उनके शिक्षा और रोजगार के अवसर भी सीमित हो जाते हैं। कई बार दूषित जल पीने के कारण जलजनित बीमारियाँ जैसे हैजा, टाइफाइड और डायरिया फैलती हैं, जिससे जनस्वास्थ्य संकट गहराता है।

कृषि पर जल संकट का प्रभाव अत्यधिक है, क्योंकि राजस्थान की कृषि प्रणाली मुख्यतः वर्षा और भूजल पर निर्भर है। जल की कमी के कारण फसलों की उपज घटती है, भूमि बंजर होती जाती है, और किसानों को घाटा उठाना पड़ता है। इससे कृषि पर निर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था कमजोर होती है और किसान कर्ज़ में डूबकर आत्महत्या तक करने को विवश हो जाते हैं। कई बार किसानों को अपनी जमीन छोड़कर शहरों की ओर पलायन करना पड़ता है, जिससे शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का दबाव और बढ़ता है।

पशुपालन भी जल संकट से बुरी तरह प्रभावित होता है। राजस्थान के कई क्षेत्रों में पशुपालन आजीविका का प्रमुख साधन है, किंतु जल की अनुपलब्धता से पशुओं के लिए पानी और चारा मिलना कठिन हो जाता है। इससे पशुधन की मृत्यु दर बढ़ जाती है और दूध उत्पादन में गिरावट आती है, जो पोषण सुरक्षा और ग्रामीण आय को प्रभावित करता है।

जल संकट का पर्यावरण पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नदियाँ, तालाब, और झीलें सूखने लगती हैं, जिससे जैव विविधता प्रभावित होती है। जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ हरित आवरण में कमी आती है, और मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया तेज हो जाती है। वनस्पति और जीव-जंतु जल संकट के कारण अपने पारिस्थितिक तंत्र से विस्थापित हो जाते हैं, जिससे पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ता है।

सामाजिक दृष्टि से जल संकट कई संघर्षों और असमानताओं को जन्म देता है। जल वितरण की असमानता के कारण वर्ग, जाति और क्षेत्र के आधार पर टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है। राजनीतिक स्तर पर जल को लेकर विवाद बढ़ते हैं, और जल आपूर्ति व्यवस्था में भ्रष्टाचार पनपता है। इसके साथ ही जल संकट से शिक्षा पर भी असर पड़ता है, क्योंकि कई बार स्कूलों में पर्याप्त जल सुविधा न होने के कारण बच्चों की उपस्थिति घटती है।

इस प्रकार, राजस्थान में जल संकट केवल एक प्राकृतिक आपदा नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौती बन चुका है। इसके प्रभाव बहुआयामी और दीर्घकालिक हैं, जिनसे निपटने के लिए एकीकृत, समन्वित और संवेदनशील रणनीतियों की आवश्यकता है।

5. सरकार एवं समाज द्वारा उठाए गए प्रयास

राजस्थान में जल संकट की गंभीरता को देखते हुए राज्य सरकार, केंद्र सरकार तथा समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा समय-समय पर कई प्रयास किए गए हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य जल संरक्षण, जल स्रोतों का पुनर्जीवन, पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना तथा लोगों में जल के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना रहा है। हालाँकि चुनौतियाँ अभी भी व्यापक हैं, फिर भी इन प्रयासों से समाधान की दिशा में सकारात्मक संकेत मिलते हैं।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 6 | June 2025

राजस्थान सरकार ने वर्ष 1999 में पहली बार राज्य जल नीति लागू की, जिसका उद्देश्य जल के समुचित उपयोग, पुनर्भरण और वितरण में संतुलन स्थापित करना था। इसके बाद 2010 और 2021 में संशोधित नीतियाँ बनाई गईं, जिनमें जल संसाधनों के सतत उपयोग, वर्षा जल संचयन को अनिवार्य बनाना, और भूजल के अनियंत्रित दोहन को रोकने की व्यवस्था की गई। ग्रामीण क्षेत्रों में 'मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान' एक महत्त्वपूर्ण पहल रही है, जिसे 2016 में शुरू किया गया। इस अभियान के अंतर्गत वर्षा जल संचयन, जोहड़ों का निर्माण, नालों की मरम्मत और पारंपरिक जल संरचनाओं के पुनर्जीवन का कार्य किया गया, जिससे कई गांवों में भूजल स्तर में सुधार देखा गया।

सरकार द्वारा 'राजस्थान ग्रामीण जल आपूर्ति और स्वच्छता परियोजना' भी लागू की गई है, जो विश्व बैंक की सहायता से संचालित होती है। इसका उद्देश्य ग्रामीण आबादी को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराना और जल गुणवत्ता सुधारना है। साथ ही, 'जल जीवन मिशन' के अंतर्गत हर घर नल योजना को भी राजस्थान में गति दी जा रही है, जिससे हजारों गांवों में पाइपलाइन द्वारा जल आपूर्ति सुनिश्चित की जा रही है। जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए भवन निर्माण में वर्षा जल संचयन प्रणाली को अनिवार्य किया गया है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में।

समाज की भूमिका भी इस संकट से निपटने में उल्लेखनीय रही है। अनेक स्वयंसेवी संस्थाएं, सामाजिक कार्यकर्ता और ग्रामीण समुदाय जल संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। जोधपुर, बीकानेर और नागौर जैसे जल-संकटग्रस्त क्षेत्रों में कई गैर-सरकारी संगठनों ने पारंपरिक जल संरचनाओं के पुनर्निर्माण और समुदाय आधारित जल प्रबंधन को प्रोत्साहित किया है। प्रसिद्ध जल योद्धा राजेंद्र सिंह द्वारा 'तरुण भारत संघ' के माध्यम से अलवर जिले में नदियों और जल स्रोतों का पुनर्जीवन एक प्रेरणादायक उदाहरण है। उनके प्रयासों से अरवरी, रूपारेल और साएनी जैसी सूखी नदियाँ पुनः जीवित हो चुकी हैं।

विद्यालयों, कॉलेजों और पंचायत स्तर पर जल संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान, वर्कशॉप और जल साक्षरता कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। इन अभियानों का उद्देश्य लोगों को जल की महत्ता समझाना और उसके जिम्मेदार उपयोग के प्रति प्रेरित करना है। मीडिया, सामाजिक मंच और डिजिटल अभियान भी जल संकट पर चर्चा और समाधान की संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं।

इन सब प्रयासों के बावजूद जल संकट की जड़ें इतनी गहरी हैं कि केवल सरकारी योजनाएँ ही पर्याप्त नहीं हैं। जब तक समाज की सक्रिय भागीदारी, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार योजनाएँ नहीं बनतीं, तब तक यह समस्या पूर्ण रूप से हल नहीं हो सकती। इसलिए सरकार और समाज दोनों को मिलकर एक दीर्घकालिक, समावेशी और व्यवहारिक रणनीति अपनानी होगी, जिससे राजस्थान की आने वाली पीढ़ियाँ जल संकट से मुक्त हो सकें।

6. समाधान एवं सुझाव

राजस्थान में जल संकट की समस्या अत्यंत जटिल और बहुआयामी है, जिसे केवल एक पक्षीय प्रयासों से हल नहीं किया जा सकता। इसके समाधान के लिए एक समग्र, बहुस्तरीय और दीर्घकालिक रणनीति की आवश्यकता है, जिसमें सरकार, समाज, वैज्ञानिक संस्थान, किसानों और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी हो। चूंकि यह संकट प्राकृतिक कारणों के साथ-साथ मानवीय गतिविधियों का भी परिणाम है, अतः इसके समाधान हेतु तकनीकी, नीतिगत, व्यवहारिक और सामाजिक पहलुओं को एक साथ संबोधित करना आवश्यक है।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 6 | June 2025

सबसे पहले, वर्षा जल संचयन को अनिवार्य रूप से अपनाया जाना चाहिए। राजस्थान में वर्षा की मात्रा भले ही कम हो, लेकिन यदि उसका प्रभावी संचयन किया जाए तो जल संकट में काफी हद तक राहत मिल सकती है। प्रत्येक भवन, विद्यालय, कार्यालय और सार्वजनिक स्थल पर वर्षा जल संचयन प्रणाली को लागू करना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक जल संरचनाओं जैसे टांके, जोहड़, बावड़ी और नाड़ी का पुनरुद्धार कर उन्हें सक्रिय किया जाना चाहिए। यह न केवल जल पुनर्भरण में सहायक होगा, बल्कि स्थानीय स्तर पर जल उपलब्धता भी सुनिश्चित करेगा।

भूजल के अनियंत्रित दोहन पर कड़ा नियंत्रण आवश्यक है। इसके लिए सरकार को ऐसे क्षेत्रों में बोरवेल की अनुमति सीमित करनी चाहिए जहाँ जल स्तर खतरे के निशान से नीचे है। साथ ही, सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियाँ जैसे टपक सिंचाई और स्प्रिंकलर प्रणाली को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिससे कृषि में जल की खपत घटे और फसलों को आवश्यकतानुसार ही जल मिले। इसके साथ ही राज्य की कृषि नीति में बदलाव कर ऐसे फसलों को बढ़ावा देना चाहिए जो कम जल में भी उपज सकते हैं जैसे बाजरा, ग्वार और मूंग।

जल गुणवत्ता सुधार भी एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। कई क्षेत्रों में जल में फ्लोराइड, नाइट्रेट और अन्य रासायनिक तत्वों की मात्रा अधिक पाई गई है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। अतः जल परीक्षण प्रयोगशालाओं की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए और दूषित जल स्रोतों के स्थान पर वैकल्पिक स्रोत विकसित किए जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त जल को शुद्ध करने की सस्ती तकनीकों को गाँव-गाँव तक पहुँचाया जाना चाहिए।

जन-जागरूकता अभियान जल संकट के समाधान में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। स्कूलों, कॉलेजों, पंचायतों और सामाजिक संगठनों को जल संरक्षण का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। मीडिया, सोशल मीडिया और स्थानीय भाषाओं में प्रचार-प्रसार के माध्यम से आम जनता को जल बचाने की आवश्यकता और तरीके बताए जाने चाहिए। जल संरक्षण को केवल सरकार की जिम्मेदारी न मानते हुए प्रत्येक नागरिक को इसे अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार करना होगा।

नीतिगत स्तर पर, एक प्रभावशाली राज्य जल आयोग की स्थापना की जानी चाहिए जो जल वितरण, नियमन, मूल्य निर्धारण और पुनर्भरण की समग्र निगरानी करे। सरकारी योजनाओं का पारदर्शी क्रियान्वयन, सामुदायिक भागीदारी और विज्ञान-प्रौद्योगिकी का मेल ही इस संकट का स्थायी समाधान प्रदान कर सकता है।

अतः राजस्थान में जल संकट का समाधान केवल तकनीकी उपायों में नहीं, बल्कि सामूहिक जागरूकता, नीति सुधार और परंपरा एवं आधुनिकता के संतुलन में निहित है। यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाली पीढ़ियों को इसका गंभीर खामियाज़ा भुगतना पड़ेगा।

7. निष्कर्ष

राजस्थान में जल संकट एक अत्यंत गंभीर और बहुआयामी समस्या बन चुका है, जो राज्य के पर्यावरण, अर्थव्यवस्था, जनजीवन और विकास की दिशा को गहराई से प्रभावित कर रहा है। यह संकट केवल प्राकृतिक कारणों का परिणाम नहीं है, बल्कि मानवीय लापरवाही, जल के प्रति असंवेदनशीलता, नीति निर्माण में दूरदर्शिता की कमी और संसाधनों के असंतुलित दोहन का भी परिणाम है। कम वर्षा, भूजल का अत्यधिक दोहन, पारंपरिक जल स्रोतों की उपेक्षा, और बढ़ती जनसंख्या के साथ जल की बढ़ती मांग ने इस संकट को और भी विकराल बना दिया है। राज्य के अनेक क्षेत्रों में जल स्तर चिंताजनक हद तक नीचे जा चुका है और कई गाँवों और शहरों में जल आपूर्ति एक विकट समस्या बन गई है।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 6 | June 2025

इस संकट का प्रभाव केवल पेयजल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक ताने-बाने को भी प्रभावित कर रहा है। किसानों को जल की कमी के कारण फसल उत्पादन में भारी नुकसान उठाना पड़ता है, जिससे आर्थिक अस्थिरता और ग्रामीण पलायन बढ़ता है। महिलाएँ और बच्चे जल लाने के कार्य में अत्यधिक समय व्यतीत करते हैं, जिससे उनकी शिक्षा और विकास बाधित होता है। जलवायु परिवर्तन और मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया भी जल संकट को और तीव्र बना रही है, जिससे राज्य का पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

हालाँकि सरकार और समाज दोनों स्तरों पर इस समस्या से निपटने के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं, जिनमें 'मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान', 'जल जीवन मिशन', पारंपरिक जल संरचनाओं का पुनरुद्धार, और वर्षा जल संचयन जैसी योजनाएँ शामिल हैं। सामाजिक संगठनों और जल योद्धाओं ने भी कई क्षेत्रों में प्रभावी कार्य कर यह सिद्ध किया है कि यदि इच्छाशक्ति हो तो जल संकट को मात दी जा सकती है। लेकिन इन प्रयासों की सफलता तभी संभव है जब इनका प्रभावी क्रियान्वयन हो, जनभागीदारी सुनिश्चित की जाए, और स्थानीय स्तर पर जल प्रबंधन को समुदायों के हाथों में सौंपा जाए।

भविष्य की दृष्टि से यह आवश्यक हो गया है कि जल संरक्षण को केवल सरकारी नीति या योजना न मानकर एक जन आंदोलन के रूप में विकसित किया जाए। जल का समुचित नियोजन, वैज्ञानिक आधार पर संसाधनों का उपयोग, और पारंपरिक ज्ञान के साथ आधुनिक तकनीक का संतुलित समावेश ही इस संकट से स्थायी समाधान प्रदान कर सकता है। विद्यालयों से लेकर पंचायतों तक, और शहरों से लेकर गाँवों तक हर व्यक्ति को जल की महत्ता को समझते हुए उसके संरक्षण के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी निभानी होगी।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि राजस्थान में जल संकट कोई असाध्य रोग नहीं है, बल्कि एक ऐसी चुनौती है जिसका समाधान सामूहिक संकल्प, सतत प्रयास और सामाजिक सहभागिता से संभव है। यदि अब भी हम सचेत नहीं हुए, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए जल एक दुर्लभ और संघर्ष का विषय बन जाएगा। जल जीवन का मूल है, और इसके संरक्षण के बिना सतत विकास की कल्पना भी अधूरी है। अब समय आ गया है कि 'हर बूँद की कीमत' को समझा जाए और जल बचाने की दिशा में एकजुट होकर कार्य किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राजस्थान सरकार। राजस्थान राज्य जल नीति 2021। जयपुर: जल संसाधन विभाग।
2. भारत सरकार। जल जीवन मिशन – दिशा-निर्देश एवं प्रगति रिपोर्ट। नई दिल्ली: पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय।
3. राजस्थान सरकार। मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान: कार्यान्वयन एवं परिणाम रिपोर्ट (2016-2020)। जयपुर।
4. सिंह, राजेन्द्र। पानी का पुनर्जागरण: तरुण भारत संघ का अनुभव। अलवर: तरुण भारत संघ प्रकाशन।
5. नीति आयोग। Composite Water Management Index – 2020। नई दिल्ली: भारत सरकार।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 6 | June 2025

6. कृषि विभाग, राजस्थान सरकार। सिंचाई जल प्रबंधन और कृषि जल दक्षता रिपोर्ट, 2020। जयपुर।

7. World Bank. Rajasthan Rural Water Supply and Sanitation Project – Final Report, 2015. Washington, D.C.

8. Sharma, R.K. & Verma, S. (2019). Water Scarcity in Rajasthan: A Regional Assessment, Indian Journal of Environmental Protection, Vol. 39(2), pp. 145-152.

9. Centre for Science and Environment (CSE)। State of India's Water Report – 2021। नई दिल्ली: CSE प्रकाशन।

10. Down To Earth Magazine। Rajasthan's Dry Future, April 2022 Issue, Centre for Science and Environment, New Delhi।